पक्षी भी पहनते हैं शादी का सूट

डॉ. किशोर पंवार

"बदले बदले मेरे सरकार नज़र आते है, घर की बर्बादी के आसार नज़र आते है।" यह एक पुराना फिल्मी गीत है जो मुझे यह लेख लिखते समय बार-बार याद आ रहा है। रिमझिम फुहारों के इन सुहाने दिनों में प्रकृति की धानी चुनर पर यहां-वहां विचरण कर रहे कुछ पक्षियों की मादाएं अपने बदले-बदले सरकार को देखकर बड़ी खुश हैं। लेकिन ऐसे आलम में उन्हें घर की बबार्दी नहीं आबादी के आसार नज़र आ रहे हैं। जी हां, इन दिनों घास के मैदान, स्कूल-कॉलेज के लॉन और पानी भरे बरसाती गड्ढों के आसपास चहलकदमी कर रहे बगुलों, अपना घोंसला बुनने में व्यस्त बया और कुछ अन्य पक्षियों को देखकर लगता है कि वे बदल गए हैं।

जो गाय बगुले कुछ दिनों पूर्व तक नील और टिनोपाल लगे कपड़ों की तरह 'सफेद झक' दिखाई दे रहे थे अब उनका सिर, गर्दन और वक्ष सुनहरी-पीला सा हो गया है। लघु बगुले के सिर पर एक सुंदर कलगी निकल आई है, जो पहले नहीं थी। पक्षियों के रंग-रोगन और सजावट का यह पूरा मामला दरअसल उनकी लैंगिक द्विरूपता और प्रणय काल में रूप परिवर्तनों से जुड़ा हुआ है। देखा गया है कि परिन्दों की जिन जातियों में नर-मादा में बाहरी भेद होता है वहां सामान्यतः नर अधिक भड़कीले, चमकीले और बड़ी पूंछ वाले होते हैं। नर चिड़िया की तुलना में मादा अपेक्षाकृत फीके रंग और छोटे पंखों वाली होती है। हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर इसका सटीक उदाहरण है।

मोर और मोरनी के पखों के रंग-संयोजन और पूंछ की लंबाई में ज़मीन आसमान का अंतर है। पक्षी जगत में ऐसे एक-दो नहीं, सैकड़ों उदाहरण हैं, जहां नर ज़्यादा रंगीन, ज़्यादा आकर्षक नज़र आते हैं - जैसे शाह बुलबुल, खरमौर, शकरखोरे, मैड्रिड बतख, सुरखाब और सभी बड्र्स ऑफ पेराडाइस।

नर और मादा के रंग-रूप का यही भेद लैंगिक द्विरूपता कहा जाता है। परंतु जिन पक्षियों में लैंगिक द्विरूपता नहीं पाई जाती, उनका भी रंग-रूप प्रणय काल में बदल जाता है। लगता है प्रकृति किसी के साथ नाइन्साफी नहीं करती। वस्तुतः बगुलों और बया के साथ इन दिनों ऐसा ही हो रहा है।

गाय बगुला जिसे *केटल एग्रेट* के नाम से भी पुकारते हैं, में नर-मादा एक से होते हैं परंतु जून-जुलाई में इनकी पीठ और वक्ष पर पीले रंग के सुंदर रोएंदार सजावटी पिच्छ (एग्रेट) निकल आते हैं । इस समय इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि जैसे दूल्हा-दुल्हनों ने शादी का रंगीन-रोएंदार जोड़ा (सूट) पहन रखा हो।

यही नहीं लघु बगले में तो बाकायदा इनके सिर से दो पतले-लंबे पिच्छल वाली एक लंबी कलगी निकल आती है। जिसे देखकर लगता है कि इन्होंने भी हमारे दूल्हा-दुल्हनों की तरह सिर पर सेहरे बांध रखे हैं। मुझे लगता है कि मनुष्यों ने वर-वधुओं के सिर पर कलगी की भांति सेहरा बांधने की प्रेरणा ज़रूर मोर, खरमौर और बगुले जैसे पक्षियों को देखकर ही ली होगी।

मोर के सिर पर तो कलगी हमेशा पाई जाती है। परंतु घास की बीड़ में पाए जाने वाले तुकदर या खरमौर में तो नर खरमौर में प्रजनन काल में दो सुंदर काली कलगी फूट आती हैं जो आंख के पीछे वाले हिस्से से निकलती हैं और शरीर के समानांतर होती हैं। नर अपेक्षाकृत और काला हो जाता है। नर प्रणय प्रदर्शन के दौरान एक

गाय बगुला

दिन में लगभग 500 बार तक चार-पांच फीट ऊपर उछलता है - मादा को आकर्षित करने के लिए। उल्लेखनीय है यह सुंदर पक्षी संकटग्रस्त है। इसे धार व रतलाम के घास मैदानों में देखा जा सकता है जो इसके लिए शरणस्थल घोषित किए गए हैं।

इन दिनों एक और पक्षी अपना जोड़ा बनाने में व्यस्त है - यह है बया। जी हां, वही बया जिसका घोंसला पक्षी कारीगरी का अद्भुत नमूना माना जाता है। इसके रिटार्ट के आकार के हवा में झूलते घोंसले खजूर और बबूल के पेड़ों पर देखे जा सकते हैं। इसकी विचित्र एवं विशिष्ट बनावट अमीर खुसरो ने कुछ यूं बयां की है -

अचरज बंगला एक बनाया
ऊपर नींव, तले पर छाया

बया लगभग घरेलू चिड़िया-सी दिखती है। परंतु इसके नर-मादा एक से होते हैं। प्रजनन काल में नर का रंग बदल जाता है। इसे देखकर ऐसा लगता है कि इसके सिर और वक्ष पर किसी ने हल्दी लगा दी हो। ठीक हमारे रीति-रिवाज़ों की तरह जहां दूल्हा-दुल्हन को शादी के अवसर पर हल्दी लगाई जाती है। हालांकि बया पर पीला रंग चढ़ना एक प्राकृतिक एवं आंतरिक क्रिया है।

बया को हल्दी चढ़ जाती है मगर पिंजरे के प्रसिद्ध पंछी लाल मुनिया के नर पर (जो सामान्य रूप से तो हल्के भूरे रंग का होता है) प्रणय काल में ऐसा लाल रंग चढ़ता है कि बस देखते ही बनता है। लाल मुनिया नर सुंदर प्रणय गीत भी गाता है।

प्रजनन काल में इन पक्षियों के चोला बदलने, सिर पर कलगी उग आने और सामान्य समय की तुलना में ज़्यादा तड़क-भड़क वाले हो जाने के पीछे क्या कारण है, यह पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने कई प्रयोग किए हैं। जैसे जब एक छोटे मुर्गे को उसके अंडकोष निकालकर बधिया कर दिया जाता है तो वह मादा की तरह मोटा होने लगता है, उस पर नर की पहचान वाली कलगी नहीं आती। और तो और, उसकी बांग देने की क्षमता तक चली जाती है। उसकी लड़ने की क्षमता भी नहीं रहती। यानी कुल मिलाकर नर 'नर' नहीं रहता।

उसे फिर से अंडकोष लगाने पर ये सभी गुण पुनः प्रकट हो जाते हैं। प्रयोगों से पता चला है कि नर के शरीर के अंडकोष निकालकर मादा का अंडाशय रोपित कर दिया जाए तो नर के चटख रंग जाने लगते हैं और वह मुर्गी जैसा फीके रंग का हो जाता है। इसके उलट मुर्गी में अंडकोष लगा देने से उसमें मुर्गे के गुण आ जाते हैं।

दरअसल अंडकोष से निकलने वाले नर हारमोन के कारण ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं जो मुर्गे में कलगी, चटख रंग और बांग देने के लिए उत्तरदायी होते हैं। वहीं अंडाशय से निकलने वाले हारमोन स्पर और रंगीन पंखों का विकास रोकते हैं। यही कारण है कि मादा फीके रंग की होती है। यानी नर की रंगीनियत एवं मर्दानापन के लिए अंडकोष से स्रावित हारमोन ज़िम्मेदार हैं। और ऐसे ही नर प्रतिद्वन्द्विता की स्थिति में मुर्गी को जीतते हैं। इस कारण नहीं कि वे रंगीन होने से मुर्गी को ज़्यादा आकर्षक लगते हैं। हालांकि यह बात और है कि मुर्गी ऐसे नरों को ही ज़्यादा चुनती (वरती) है जो ज़्यादा आकर्षक हों। परोक्ष रूप से यह सब नर हारमोन की सक्रियता के कारण ही होता है। *(स्रोत फीचर्स)*

खरमोर

बया और उसके घोंसले